International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-04-2019; Accepted: 14-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 71-72

कबीर के काव्य की प्रासंगिकता : वर्तमान संदर्भ में

भारती
शोधार्थी, एम०फिल, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविधालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे वातावरण में हुआ था जब देश में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक परिस्थितियों में विभिन्न विषमताओं का बोलबाला था। कबीर का व्यक्तित्व प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी था। अतः उनकी यह क्रान्तिकारी प्रतिभा भक्त प्रेमी सुधारक तथा शुद्ध मानव की विभिन्न धाराओं में प्रवाहित हुई है। उनके प्रत्येक स्वरूप में सर्वत्र एक प्रखरता, स्पष्टता, पवित्रता एवं निश्छलता के दर्शन होते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि कबीर एक साधक युगद्रष्टा थे, जिन्होंने सामाजिक विषमताओं का खण्डन कर मानव कल्याण का प्रचार किया था।
भारतीय समाज की वर्तमान परिस्थिति को देखें तो कबीर सदैव प्रासंगिक प्रतीत होते है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी 'कबीर' नामक पुस्तक में लिखते हैं –

> ''कबीरदास ऐसे मिलन बिंदु पर खड़े थे, जहाँ एक ओर हिन्दुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमानत्व, जहाँ एक ओर ज्ञान निकल जाता है, दूसरी ओर अशिक्षा, जहाँ एक ओर योगमार्ग निकल जाता है, दूसरी ओर भक्तिमार्ग, जहाँ से एक तरफ निर्गुण भावना निकल जाती है, दूसरी ओ सगुण साधना – उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे।' (1)

इस उदाहरण से कबीर के समय की सामाजिक संरचना को समझा जा सकता है।
कबीर न तो काव्य मर्मज्ञ थे और न अलंकारों के आचार्य, क्योंकि – मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहि हाथ'' (2) से उनका साहित्यिक व्यक्तित्व स्पष्ट होता है। किसी भी सामाजिक जीवन में होने वाले दिखावटीपन के विरूद्ध कबीर के हृदय में स्पष्ट विरोध उत्पन्न होता था। जैसे कि कबीर के समय में समाज में संस्कृति, धर्म और विचार की धाराएँ आपस में टकरा रही थी। एक ओर हिन्दु समाज था, जिसमें जाति व्यवस्था बनी थी। जो धर्म पर आधारित था। दूसरी ओर मुस्लिम समाज था जिसमें सामाजिक स्वर पर समानता होने के बावजूद विषमता थी। हिन्दू जनता जाति, धर्म और मुस्लिम जनता इस्लाम की कट्टरता और कर्म की चक्की में पिस रही थी। जिसको देखकर कबीर ने कहा –

''चलती चक्की देखकर, दिया कबीर रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।'' (3)

कबीर के समय में समाज में बहु–देववाद का विस्तार था और आज भी यह धारणा हिन्दू समाज में व्याप्त है। कबीर ने इसका खण्डन करते हुए हिन्दू–मुसलमानों के बीच एकता को स्थापित करने के लिए 'एकेश्वरवाद' पर विषेश बल दिया –

''हमारे राम–रहीम करीमा–केसौ–अलह–राम सति सोई।
विसमिल मेटि विसंभर एकै, और न दूजा कोई।।'' (4)

कबीर ने वेद, मंदिर, मस्जिद आदि की भी निन्दा की है। लेकिन इसके बावजूद भी आज के समय में यह व्याप्त है। जैसे कि मंदिर – मस्जिद को लेकर हिन्दू – मुसलमान समाज में द्वन्द्व की स्थिति बनी हुई है। इसका जीता–जागता उदाहरण है राम मंदिर और बाबरी मस्जिद। ऐसी स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कबीर कहते है –

''हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना।।'' (5)

कबीर हिन्दू और मुसलमान दोनों में एकता स्थापित करते हुए कहते है कि ईश्वर या (ब्रह्म) न मंदिर में है और न ही मस्जिद में। वह तो सभी प्राणियों में व्याप्त है। आज के दौर की भी यहीं मांग है –

''मोको कहाँ ढूंढै बंदे, मैं तो तेरे पास में।
न मैं देबल ना मै मस्जिद, ना काबे कैलास में।।'' (6)

कबीर भक्त और कवि बाद में हैं, समाजसुधारक पहले हैं। उनकी कविता का उद्देश्य जनता को उपदेश दना और उसे सही रास्ता दिखाना है। उन्होंने जो गलत समझा उसका निर्भीकता से खण्डन किया। अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति की ईमानदारी कबीर की सबसे बड़ी विशेषता है। कबीर ने समाज में व्याप्त जाति–प्रथा, छुआछूत एवं ऊंच–नीच की भावना पर प्रहार करते हुए कहा कि जन्म के आधार पर कोई ऊंचा नहीं होता, ऊंचा वह है। जिसके कर्म अच्छे है –

''ऊंचे कुल का जनमिया करनी ऊंच न होय
सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दत सोय।।'' (7)

कबीर की कविता में प्रेम का आपार विस्तार है और असीम महत्त्व। वर्तमान समय में मनुष्य और मनुष्य के बीच स्वार्थ को लेकर प्रेम पलता है। आज मानव, मानव के प्रेम के लिए तरस रहा है, इसका कारण है – समय का अभाव जोकि एक बहाना मात्र है। किताबों और वेद ज्ञान की आलोचना करते हुए कबीर कहते है –

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होई।।'' (8)

कबीर की प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति 'व्यंग्य' को विशिष्ट सामाजिक–कला बनाती है। वह आज भी साधारण जनता को सत्ता और धर्म के ठेकेदारों से परेशान करने वाले प्रश्न पूछने की प्रेरणा देती है। कबीर के प्रश्न जितने सहज और बेलाग है, उतने ही तिलमिला देने वाले भी है –

''हमारे कैसे लहू तुम्हारे कैसे दूद।
तुम कैसे बामन पाण्डे हम कैसे सूद।।'' (9)

कबीर अपने युग के प्रति पूर्ण सचेत थे, वे सत्य एवं नैतिक मान्यताओं पर अधिक धान देते हैं। वर्तमान समय में किसी मानव को दूसरे मानव पर विश्वास ही नहीं है, क्योंकि सत्य और नैतिकता का पतन हो रहा है। इसलिए कबीर कहते है –

''सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय सांच है, ताके हिरदय आप।।'' (10)

कबीर ने हिन्दू – मुस्लिम दोनों के दिखावटी स्वरूप का खुलकर विरोध किया है। एक तरफ वे हिन्दुओं में तीर्थयात्रा, माला फेरना, जपतप करना, मूर्ति–पूजन, तिलक लगाना इत्यादि का विरोध करते हैं। तो दूसरी तरफ मुसलमानों में रोज़ा, नमाज़ और अज़ान का भी विरोध करते है। लेकिन वर्तमान समय में यह सब और अधिक बढ़ गया है। कबीर ने इन सबका खण्डन करते हुए कहा है –

''माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारि दै, मन का मनका फेर।।'' (11)

कबीर ने समाज में व्याप्त जीव–हिंसा का भी विरोध किया। लेकिन वर्तमान समय में भी कुछ लोग अपने ईश्वर (भगवान) को खुश करने के लिए जीवों की हत्या करते हैं, और इसी में उनको संतोष मिलता है। अब तो धर्म के अलावा व्यवसाय के नाम पर भी जीव की हत्या होने लगी है यह समस्या अब विकराल रूप ले चुकी है। कबीर इस पर तीखा प्रहार करते हुए कहते है –

''अरे इन दोउन राहन पाई।'' (12)

''दिन में रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुशी खुदाय।।'' (13)

कबीर के काव्य से हमें जीवन जीने की कला की सीख मिलती है। कबीर कर्म पर विश्वास करने वाले थे वह उसी को अपना धर्म भी मानते थे। इसलिए वर्तमान समय में यह बात और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है कि इसी के कारण कबीर, कबीर कहलाए। कबीर कहते है –

''झीनी–झीनी बीनी चदरियां।
काहै कै ताना काहै कै भरनी,
कौन तार से बीनी चदरिया।।'' (14)

कबीर ऐस व्यक्ति थे जो न केवल सही को सही, बल्कि गलत को गलत कहने का भी साहस रखते थे। लेकिन वर्तमान समय में तो व्यक्ति गलत को गलत कहने का साहस भी नहीं कर पाता। ऐसा था कबीर का व्यक्तित्व जिसका स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार है –

''अपना मस्तक काटि कै बीर भया कबीर।'' (15)

काबीर की लोकप्रियता के बारे में यह उक्ति संगत बैठती है कि – ''कबीर की कविता की लोकप्रियता का एक कारण उसकी बोलचाल और जीवन–व्यवहार की भाषा है। उसकी बनावट ऐसी है कि हिन्दू और मुसलमान , साधु और गृहस्थ, नगर और देहाती, पढें–लिखे और अनपढ, स्त्री और पुरूष सबको अपनी भाषा लगती हैं। वह जितनी सहज है उतनी ही अर्थपूर्ण भी।'' (16)

लेकिन वर्तमान समय में भाषा श्रेत्रों में बंट गयी है सभी की अपनी –अपनी भाषाएँ हो गयी हैं। वह कहते हैं–

''संस्करीत है कूप जल, भाषा बहता नीर । '' (17)

अंतः आज की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों को देखकर भले ही हमें यह लगता है कि हम उत्तर कबीर युग में जी रहे हैं, लेकिन अगर हम कबीर की कविता को घ्यान से पढ़े तो यह स्पष्ट होगा कि उसमें आज के हमारे समय और समाज के अनेक जटिल सामाजिक सांस्कृतिक प्रश्नों की पहचान के संकेत हैं और उनके उत्तर की सम्भावनाएं भी। कबीर में गहरी प्रश्नाकुलता है जो जितनी ही मार्मिक है उतनी ही व्यंग्य पूर्ण भी। उनके यह प्रश्न चली आ रही धर्म, राजसत्ता व शोषण की परम्परा पर तीख़ा प्रहार करते है। कबीर की यह प्रश्नाकुलता आज भी सामान्य जनता को सत्ता के विरूद्ध हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करती है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि कबीर का काव्य वर्तमान समय में भी प्रासंगिकता का पुट लिय हुए है। जो इनके काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेद्वी, राजकमल प्रकाश्न, पृष्ठ संख्या – 18
2. वही पृष्ठ संख्या – 174
3. वही पृष्ठ संख्या – 265
4. वही पृष्ठ संख्या – 145
5. वही पृष्ठ संख्या – 147
6. वही पृष्ठ संख्या – 179
7. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, पृष्ठ संख्या – 207
8. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेद्वी, पृष्ठ संख्या – 145
9. वही पृष्ठ संख्या – 147
10. कबीर सम्रग, युगेश्वर, पृष्ठ संख्या – 443
11. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेद्वी, पृष्ठ संख्या – 150
12. वही पृष्ठ संख्या – 271
13. वही पृष्ठ संख्या – 271
14. वही पृष्ठ संख्या – 255
15. वही पृष्ठ संख्या – 265
16. वही पृष्ठ संख्या – 21
17. वही पृष्ठ संख्या – 255